

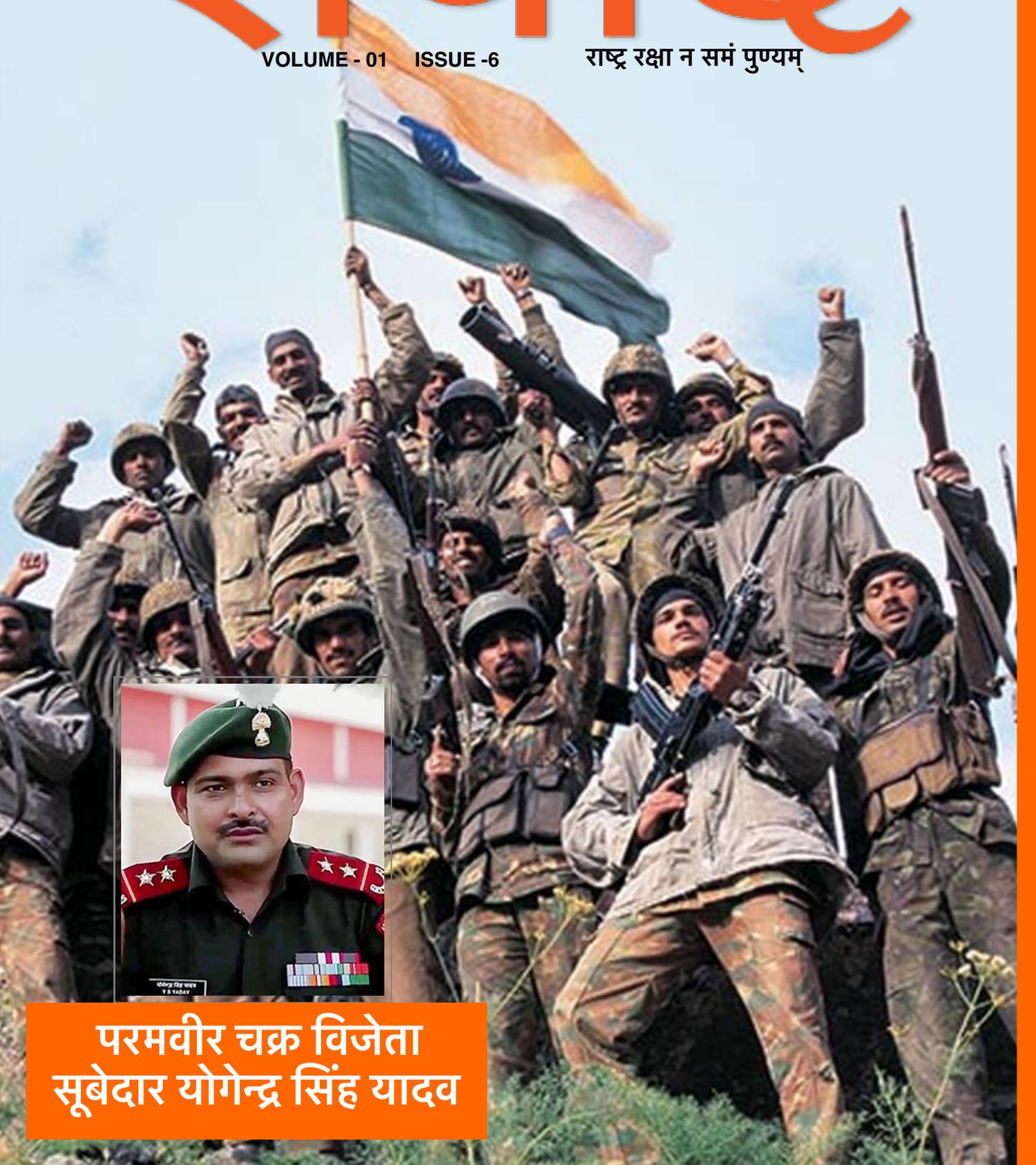
जनवरी, 2022

● सैनिक मित्र

# सवाह

VOLUME - 01 ISSUE -6

राष्ट्र रक्षा न समं पुण्यम्



परमवीर चक्र विजेता  
सूबेदार योगेन्द्र सिंह यादव

# भारतीय सेना



किसी भी राष्ट्र की सुरक्षा की जिम्मेदारी उस देश के सशस्त्र बलों के कंधों पर होती है। देश को एक साथ बांधने के लिए और राष्ट्रीय भावना को जागृत करने में सशस्त्र सेनाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। इसका जीता जागता उदाहरण भारत और पाकिस्तान की सेनाएँ हैं। एक साथ अस्तित्व में आए भारत और पाकिस्तान की तुलना करें तो एक ओर जहाँ सेना की सुरक्षा में भारत एक संपन्न लोकतंत्र के रूप में फल फूल रहा है वहीं पाकिस्तान की दुर्दशा किसी से छिपी नहीं है। आज पाकिस्तान की जो स्थिति है उसमें एक अप्रशिक्षित सेना का बार-बार शासन में हस्तक्षेप करना सबसे बड़ा कारण रहा है।

15 अगस्त 1947 को भारत का वर्तमान नक्शा अस्तित्व में आया। स्वतंत्र राष्ट्र के निर्माण में भारतीय सेना का योगदान भारत की स्वतंत्रता की पहली लड़ाई के साथ ही शुरू हो गया था। विदेशी शासन के खिलाफ भारतीय सैनिकों का विद्रोह स्वतंत्रता संग्राम के दौरान सबसे प्रेरणादायक घटना है। भारत छोड़ते समय 21 मार्च 1947 को अपने विदाई संबोधन के दौरान लार्ड वेवेल ने कहा था कि मेरा मानना है कि भारतीय सेना की स्थिरता शायद भारत के भविष्य में निर्णायक कारक होगी। स्वतंत्र भारत की भौतिक सीमाएं दुनिया के सबसे कठोर इलाकों में फैली हुई हैं। यह विभिन्न संस्कृतियों धर्म और भाषाओं वाला

देश है। कठिन सीमाओं और आंतरिक उथल-पुथल के कारण एक व्यवहार्य और सुसंगत राष्ट्रीय इकाई बनाने के लिए जो अनूठी चुनौतियां पैदा हुई उसे भारतीय सेना ने बखूबी निभाया है।

## भारत का एकीकरण

विभाजन के प्रलय से निपटने में भारतीय सेना की भूमिका अनुकरणीय रही। विभाजन की अभूतपूर्व हिंसा के दौरान भारतीय सैनिकों द्वारा प्रदर्शित निष्पक्षता ने स्थिति पर नियंत्रण करने और व्यवस्था बहाल करने में मदद की। विभाजन की विभीषिका से देश संभाला भी नहीं था तभी श्रीनगर पर पाकिस्तानी सेना ने आक्रमण कर दिया। उस समय भारतीय सेना ने कश्मीर को सफलतापूर्वक बचाया और इस तरह भारतीय सेना के स्वतंत्रता के बाद के इतिहास की गौरवशाली गाथा शुरू हुई। संपूर्ण भारत को एक करने के लिए और



कुछ अड़ियल राज्यों को भारत में मिलाने के लिए भारतीय सेना ने सफल अभियान चलाए। सेना ने गोवा, दमन और दीव को आजाद करा कर राष्ट्र को विदेशी उपनिवेश से छुटकारा दिलाया।

### भारत की सुरक्षा

पिछले छह दशकों और उससे भी अधिक समय में भारतीय सेना ने अपने दो पड़ोसियों के साथ तीन बड़े युद्ध और अन्य दो सीमित युद्ध लड़े हैं। इन युद्धों को अनिवार्य रूप से क्षेत्रीय अखंडता की रक्षा के लिए और राष्ट्रीय ताने-बाने को संरक्षित करने के लिए लड़ा गया था। जहां तक आंतरिक सुरक्षा सुनिश्चित करने का संबंध है जम्मू कश्मीर और प्रभावित पूर्वोत्तर राज्यों में चल रहे अभियानों का उद्देश्य बाहरी रूप से उकसाया गए छद्म युद्ध और विद्रोह का मुकाबला करना है। जम्मू कश्मीर में भारतीय सेना ने ऐसी



परिस्थितियां पैदा करने में सहायता की है जिससे नागरिक शासन अपनी संवैधानिक भूमिका पूरा करने में सक्षम बन सका है।

### अंतर्राष्ट्रीय शांति रक्षक

भारतीय सेना ने विदेशी धरती पर भी कई बार शांति रक्षक के रूप में कार्य किया है। भारतीय सेना ने 1988 में मालदीव में एक लोकतांत्रिक सरकार को



समर्थन देने के लिए हस्तक्षेप किया श्रीलंका में शांति स्थापना में सहायता करने में भी भारतीय सेना ने अपना योगदान दिया।

### आंतरिक स्थिरता में योगदान

भारतीय सेना ने व्यवसायिकता, कर्तव्य के प्रति समर्पण और अनुशासन के अनुकरणीय मानदंडों के उच्च मानकों से लोकतंत्र को सक्रिय रूप से पोषित किया है। राष्ट्र के लोकतांत्रिक कद को हमेशा निष्पक्ष लोकाचार और भारतीय सेना के अराजनीतिक चरित्र का समर्थन मिला है।

### भौतिक राष्ट्र निर्माण

दूरस्थ क्षेत्रों में भारतीय सेना की तैनाती से बुनियादी ढांचे और संचार की कमी के कारण इन क्षेत्रों में लोगों के लिए बेहतर बुनियादी ढांचा विकसित किया जा रहा है। सेना की परियोजनाएं स्थानीय आबादी को रोजगार और व्यवसायिक अवसर प्रदान करती हैं जिससे उनके युवाओं के अन्य विकल्पों के प्रलोभनों के आगे झुकने की संभावना कम हो गई है। सड़कों और बुनियादी ढांचे के अलावा सेना की चिकित्सा टीम में अक्सर दूरदराज के इलाकों के निवासियों को चिकित्सा सहायता और उपचार मुहैया कराती रही है।

### आपदा प्रबंधन में योगदान

किसी भी राष्ट्रीय आपदा के समय भारतीय सेना सदैव उपलब्ध रहती है। जम्मू कश्मीर में बाढ़ और उत्तराखंड में त्रासदी से लेकर नेपाल में आए भूकंप के बाद शुरू किए गए हालिया ऑपरेशन मैत्री तक भारतीय सेना आपदा राहत अभियानों में सबसे आगे रही है।

### युवाओं और खेलों में योगदान

भारतीय सेना से प्रशिक्षित और अनुशासित युवा देश की अमूल्य धरोहर हैं। सेना के नेतृत्व वाली राष्ट्रीय कैडेट कोर युवाओं को संवारने, उनमें अनुशासन, निस्वार्थ सेवा और राष्ट्रवाद की भावना के गुणों को आत्मसात करने में लगी हुई है। भारतीय सेना खेल और साहसिक गतिविधियों के क्षेत्र में राष्ट्र का नेतृत्व करती है। मिल्खा सिंह और ध्यानचंद राष्ट्रीय प्रतीक हैं। कर्नल राज्यवर्धन सिंह राठौड़ और सूबेदार मेजर विजय कुमार ने ओलंपिक में रजत पदक जीतकर देश को गौरवान्वित किया है।

### सेवानिवृत्त सैनिक

भारतीय सेना के दिग्गज देश के लिए एक मूल्यवान संसाधन हैं। भारतीय सेना के लिए काम करने वाले दिग्गजों में जीवन भर अनुशासन और बलिदान की भावना कूट-कूट कर भरी रहती है। कई दिग्गजों ने शासन, कूटनीति, रणनीतिक सोच, निजी उद्योग और विभिन्न गैर सरकारी संगठनों में अपने दूसरे कैरियर में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। समृद्ध अनुभव, प्रेरणा, ज्ञान, अनुशासन, वफादारी और इस सेवानिवृत्त समुदाय की देशभक्ति का उपयोग सरकारी और निजी उद्योग दोनों द्वारा राष्ट्रीय हित में किया जाना चाहिए और उनका लाभ उठाया जाना चाहिए। दिग्गजों ने मतनिरपेक्षता, राष्ट्रवाद और आत्म बलिदान जैसे गुणों के साथ समाज को प्रभावित किया है और राष्ट्र निर्माण में सेना की भूमिका को जारी रखा है।



## परमवीर चक्र विजेता सूबेदार योगेन्द्र सिंह यादव



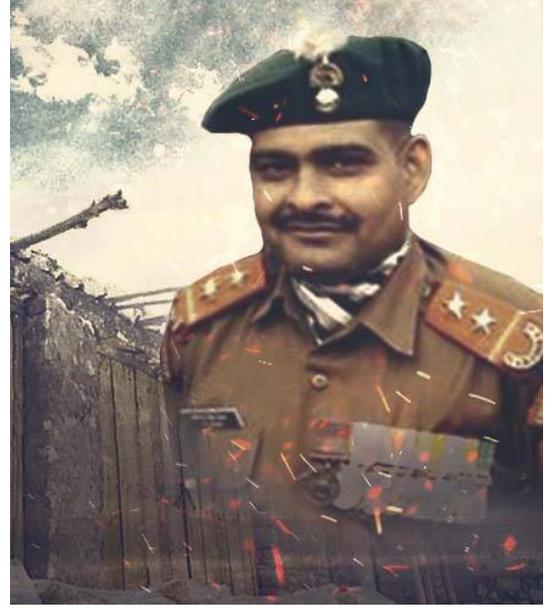
सेक्टर द्रास की टाइगर हिल पर लहलुहान पड़ा एक सैनिक, चारों तरफ से बरसतीं दुश्मन पाकिस्तान की गोलियां। 15 गोलियां शरीर में लग चुकी थीं, लेकिन जवान था कि हार मानने को तैयार नहीं, शरीर साथ नहीं दे रहा था, बार-बार गिरता, फिर उठता फिर गिरता फिर उठता, एक हाथ ने काम करना बंद कर दिया लेकिन दूसरे हाथ से बंदूक चलाता रहा। कई पाकिस्तानी सैनिकों को डेर किया। सांस चलती रही और वो बेसुध होकर बस लड़ता रहा लड़ता रहा.....

ये किसी फिल्म की पटकथा नहीं है, ये सच्चाई है, एक ऐसे सैनिक की जिसने अपने दम पर टाइगर हिल पर कब्जा करने का हौंसला दिखाया। ये कहानी है परमवीर चक्र विजेता योगेन्द्र सिंह यादव की, जो आज भी लोगों के रूह कंपा देती है। योगेन्द्र यादव कारगिल के वो हीरो हैं जिन्होंने अपनी जान पर खेलकर टाइगर हिल पर भारत का झंडा लहराया था। 19 साल की उम्र में ट्रेनिंग के बाद ही उन्होंने जंग की तैयारी शुरू कर दी। भारतीय सेना की 18 ग्रेनेड का हिस्सा बने योगेन्द्र को सेना में भर्ती होते ही जंग के मैदान में उतरना पड़ा। घातक

प्लाटून का हिस्सा बनते ही उन्हें 1999 में द्रास के टाइगर हिल को फतह करने की जिम्मेदारी मिली। जहां पाकिस्तानी सैनिक पहले से ही घात लगाए बैठे थे।

15 हजार फीट से ज्यादा की चढ़ाई और ऊपर हथियारों के साथ बैठा दुश्मन सबसे बड़ी चुनौती था। लेकिन फिर भी चढ़ाई करने का फैसला लिया। कुल 21 जवानों की टुकड़ी जैसे ही आधे रास्ते तक पहुंची दुश्मन ने ऊपर से हमला बोल दिया। जिसमें कई जवान शहीद हो गए। खड़ी

चट्टान के सहारे टाइगर हिल पर पहुंचना बहुत ही मुश्किल था लेकिन फिर भी वही रास्ता लिया गया ताकि दुश्मन को आभास भी ना हो कि भारतीय सेना ऐसा साहस कर सकती है। ऊपर पहुंचते ही दुश्मन के पहले बंकर को नष्ट कर डाला। लेकिन यहां तक पहुंचने में भी कई सैनिक शहीद जो गए। दूसरे बंकर तक पहुंचने तक सिर्फ 7 जवान बचे थे। दुश्मन को हमारे सैनिकों की भनक लग गई और उन्होंने फायर खोल दिया। लेकिन दुश्मन को सही लोकेशन पता नहीं चली। भारतीय सैनिक इसीलिए शांत बैठे रहे। पाकिस्तानी सैनिकों ने समझा कि सभी भारतीय सैनिक मारे गए हैं। पता लगाने के लिए जैसे ही 12 पाकिस्तानी सैनिक पास आये, योगेंद्र सिंह यादव और उनके 6 साथियों ने पोजिशन लेकर फायर खोल दिया और 11 दुश्मन सैनिकों को मार डाला 1 पाकिस्तानी सैनिक भागने में सफल रहा। भागने वाले पाकिस्तानी सैनिक ने योगेंद्र सिंह यादव और उनके



साथियों की जानकारी अपने पाकिस्तानी सैनिकों को दे दी।

अब पाकिस्तान के सैनिक पूरी तैयारी के साथ आये और योगेंद्र सिंह यादव और उनके साथियों पर हमला बोल दिया। मोर्टार का एक टुकड़ा योगेंद्र सिंह की नाक पर लगा और खून नल से पानी की तरह निकलने लगा। योगेंद्र सिंह के एक

साथी ने बताया कि सभी साथी मारे जा चुके हैं। जैसे ही बेसुध योगेंद्र यादव को उनके साथी ने खून रोकने के लिए फर्स्ट ऐड देने की कोशिश की तभी एक गोली उसके माथे को चीरती हुई निकल गई और वो वहीं शहीद हो गया। दूसरी गोली योगेंद्र सिंह यादव के कंधे पर लगी। एक के बाद एक 11 गोलियां



योगेंद्र सिंह यादव के शरीर में लगी, ना हाथ उठा रहा था और ना पैर। पाकिस्तानी सैनिक पास आ गए और मारे गए भारतीय सैनिकों पर गोलियां मार रहे थे। योगेंद्र सिंह यादव घायल थे लेकिन मरने का नाटक करते रहे, पाकिस्तानी सैनिक ने मरा समझ कर योगेंद्र सिंह यादव के 3 गोलियां मारी लेकिन वो हिले तक नहीं। उसके बाद 15 वीं गोली उनके सीने पर मारी और उनको छोड़ कर पाकिस्तानी सैनिक आगे बढ़ गए।

चढ़ाई के दौरान पीछे की साइड से योगेंद्र सिंह यादव के कपड़े फट गए थे जिसके बाद उन्होंने अपना पर्स सीने के पास वाली पॉकेट में रख लिया जिसमें 5 रुपए के कुछ सिक्के थे। जब 15 वीं गोली दुश्मन ने मारी तो वो 5 रुपयों के सिक्के से टकरा गई। ये चमत्कार से कम नहीं था।

3 सैनिक जो पाकिस्तान के थे अपने साथियों को बता रहे थे कि चोटी पर दुबारा से कब्जा कर लिया है। पूरी ताकत से योगेंद्र सिंह यादव उठे और वहां पास पड़े ग्रेनेड को उठाकर उनकी तरह फेंक दिया और तीन पाकिस्तानी सैनिकों के परखच्चे उठा दिए। उसके बाद लुढ़कते लुढ़कते सभी राइफलों को पोजिशन पर लगाने लगे। जैसे ही पाकिस्तानी सैनिकों की टुकड़ी चोटी पर वापिस आई योगेंद्र सिंह यादव अलग अलग पोजिशन से फायर करने लगे।



पाकिस्तानी सैनिकों ने सोचा कि भारतीय फ़ौज पहुंच गई है और पाकिस्तानी सैनिक पीछे हटने लगे। अब योगेंद्र सिंह यादव के सामने मुश्किल थी कि भारतीय सैनिकों को कैसे इन्फॉर्म करें क्योंकि हाथ काम नहीं कर रहा था और पैरों में कई गोलियां लगी थीं। 72 घंटे से खाने के नाम पर पारले जी बिस्किट का सिर्फ आधा पैकेट खाया था। नीचे कैसे जाएं अब ये समस्या आ रही थी

अब उन्हें एक नाला दिखाई दिया और उसी नाले में लुढ़कते लुढ़कते 500 मीटर नीचे तक आये और तभी उन्हें अपने सैनिक दिखाई दिए।

चोटी पर कब्जे की कहानी उन्होंने अपने साथियों को बताई और बेसुध हो गए। उसके बाद भारतीय जवानों ने ऊपर जाकर चोटी पर कब्जा कर लिया। 15 गोलियों के बाद भी जीवित रहते हुए दुश्मनों

से लड़ना अपने आप में एक मिसाल है जिसे कभी भूला नहीं जा सकता। 15 गोलियों को खाने के बाद भी ना अपनी और ना ही अपने परिवार की सोच कर परमवीर योगेंद्र ने सिर्फ देश की सोची। योगेंद्र सिंह यादव भारतीय सेना के उन खास जवानों में से एक हैं, जिन्हें जीवित रहते हुए परमवीर चक्र से नवाजा गया।

## ये हैं हमारे वीर खिलाड़ी



### मिल्खा सिंह

मिल्खा सिंह को लोकप्रिय रूप से "द फ्लाइंग सिख" के रूप में जाना जाता है, उन्हें 1951 में एक सिपाही के रूप में भर्ती किया गया था। एक ट्रैक और फील्ड स्प्रींटर, उन्हें भारतीय सेना में सेवा करते हुए खेल में पेश किया गया था। वह 2012 तक राष्ट्रमंडल खेलों में व्यक्तिगत एथलेटिक्स स्वर्ण पदक जीतने वाले एकमात्र भारतीय एथलीट थे। उन्होंने 1958 और 1962 के एशियाई खेलों में भी स्वर्ण पदक जीते। उन्होंने 1956 में मेलबर्न में ग्रीष्मकालीन ओलंपिक, रोम में 1960 के ग्रीष्मकालीन ओलंपिक और टोक्यो में 1964 के ग्रीष्मकालीन ओलंपिक में भारत का प्रतिनिधित्व किया।



### सूबेदार पान सिंह तोमर

बंगाल इंजीनियर्स के सूबेदार पान सिंह तोमर 1950 और 1960 के दशक में सात बार के राष्ट्रीय स्टीपलचेज़ चैंपियन थे और 1958 के एशियाई

खेलों में भारत का प्रतिनिधित्व किया था।



### नायब सुबेदार शिवनाथ सिंह

बिहार रेजिमेंट के नायब सूबेदार शिवनाथ सिंह भारत के अब तक के सबसे बेहतरीन लंबी दूरी के धावक थे। उन्होंने 1974 में तेहरान एशियाई खेलों में शानदार प्रदर्शन करते हुए 14 मीटर 20.5 के नए एशियाई रिकॉर्ड के साथ 5000 मीटर में स्वर्ण पदक जीता। उन्होंने 10000 मीटर में 30 मीटर 49.9 सेकेंड में रजत पदक भी जीता। 1975 में सियोल एशियाई चैंपियनशिप में उन्होंने फिर से इन दोनों स्पर्धाओं में रजत पदक जीते।



### नायब सूबेदार बजरंगलाल तखर

नायब सूबेदार बजरंग लाल तखर ने 2010 एशियाई खेलों में रोइंग में भारत के लिए पहला स्वर्ण पदक जीतकर इतिहास रच दिया।

आपको हमारा यह अंक कैसा लगा?

अपनी राय एवं अपने सुझाव हमें [smsamvad@gmail.com](mailto:smsamvad@gmail.com) पर अवश्य भेजें।

संपादक : प्रमोद कामत (9811424301), उप संपादक: दीपक स्वरूप

संरक्षक: डॉ. हेमेश सिंह यादव